संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक - ५० ● ११ दिसम्बर २०१८ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष चतुर्थी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

श्री राजीव रंजन मिश्र–सभा उप प्रधान कानपुर मण्डल के मण्डलीय निरीक्षक नियुक्त

आर्य मैरिज वैलीडेश–१६ ऑफ १६३७ के अन्तर्गत कानपुर मण्डल के विभिन्न जनपदों में कार्यरत आर्य समाजों द्वारा विवाह कराये जाने हेतु उत्तर प्रदेश की आर्य समाजों की स्वामिनी / प्रशासनिक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ द्वारा जारी आवश्यक निर्देश एवं औपचारिकता पूर्ति की जाँच एवं चल–अचल सम्पत्तियों एवं संचालित विद्यालयों तथा अन्य आवश्यक अभिलेखों की जाँच के साथ–साथ निम्नलिखित अभिलेखों की जॉच एवं सत्यापन हेतु सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी द्वारा अन्तरंग सभा के निर्णय के क्रम में कानपुर मण्डल के निरीक्षक श्री राजीव रंजन मिश्र–प्रान्तीय सभा, उप प्रधान एवं प्रधान–आर्य समाज हरदोई को नियुक्त किया गया है।

कानपुर मण्डल के समस्त जनपदों की आर्य समाजें निम्नवत् अभिलेख जॉच हेतु प्रस्तुत करेंगी।

१. सदस्यता पंजिका। २. साप्ताहिक सत्संग पंजिका।
३. *कार्यवाही पंजिका (साधारण सभा एवं अन्तरंग सभा)।*
४. कैश–बुक, लेजर, चेक–बुक एवं पास–बुक।
५. विवाह पंजिका एवं संस्था द्वारा जारी विवाह प्रमाण–पत्रों की जॉच।
६. चल–अचल सम्पत्तियों का निरीक्षण एवं जॉच।

वार्षिक बृहदाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/ पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक–१६ एवं २० जनवरी, २०१६ शनिवार एवं रविवार (पौष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी एवं चर्तुदशी) को यज्ञोपरान्त समारोहपूर्वक प्रातः ११ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी का अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में होना सुनिश्चित हुआ है। –स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

प्रधान जी का सन्देश –

आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा का प्रतिनिधि है

–डॉ0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

डॉ० धीरज सिंह सभा प्रधान मेरठ– २ दिसम्बर आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ के वेद प्रचार महोत्सव के समापन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा– कि आर्य समाज इन भवनों का नाम नहीं है मन्दिर शब्द का प्रयोग पहले नहीं होता था आर्य समाज तो महर्षि जी की विचारधारा का प्रतिनिधि है संवाहक है तथा उसे सदैव आगे बढ़ाने के लिए मानस पुत्र के रूप में उत्तराधिकारी है महर्षि के स्वपनों का भारत बनाने के लिए हमें ऐसे अवसरों पर संकल्प लेना चाहिये आपने बताया कि हमें आपस में गुण–धर्म–स्वभाव के अनुसार रोटी–बेटी का भी सम्बन्ध बनाना चाहिए आर्य जाति का उद्धार तभी हो सकता है समाज में बनी जातियों में हम विलीन हो जाते है और आर्य समाज दिन प्रतिदिन कमजोर होता जा रहा है। इसके लिए आप योजना बनायें और आर्य समाज में विवाह संस्कार करें इसी परम्परा की स्थापना के लिए आर्य विवाह संस्कार करें इसी परम्परा की स्थापना के लिए आर्य विवाह एक्ट सरकार ने बनाया था। आज इसका दुरूपयोग हो रहा है इसके लिए प्रत्येक जिले में सजगता की आवश्यकता है आप सभी पूरे उत्साह के साथ आर्य समाज का सम्मेलन प्रतिवर्ष करते हैं इसके लिए मैं समाज के सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का तथा प्रशासक मुकेश कुमार आर्य जी का विशेष धन्यवाद करता हुआ आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार आर्य समाज की गरिमा को बढ़ाते रहेगें सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र रत्नम् जी मेरठ तथा सभा मन्त्री स्वामी जी ने भी अपने विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई प्रधान जी का भव्य स्वागत किया गया। संयोजन वीरेन्द्र आर्य ने किया सभा में वैदिक विद्वान् वीरेन्द्र शास्त्री जी सहारनपुर–जिला प्रधान विद्यासागर मन्त्री जिले सिंह, राजेश सेठी माता कैलाश सैनी डॉ आर.पी. सिंह रणधीर शास्त्री रामपाल सिंह आदि–आदि उपस्थित रहे।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

अनैतिकता के विरुद्ध अभियान

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सच्चे शिव की खोज में गृहत्याग करने के बाद त्याग तपस्या एवं वेदों व अन्य आर्ष गन्थों के अध्ययन अवगाहन से प्राप्त ज्ञान के अलोक से भारतीय समाज का मार्गदर्शन कर तथा अपने जीवन एवं आचरण से नवीन प्रतिमान स्थापित किया ही, उनके आदर्शों पर चलने वाले आर्यजनों ने भी सत्य, शील, सदाचरण, निष्ठा एवं नैतिकता का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर प्रतिष्ठा प्राप्त की। तत्कालीन आर्यजन सामाजिक मार्यादा के प्रतीक में क्रमिक ह्रास आता गया। अब तो समाज के सुधार के स्थान पर आर्यजनों के सुधार का प्रश्न ही गम्भीर रूप धारण कर चुका है। यह स्थिति क्यों आयी और इस संकट को कैसे दूर किया जा सकता है, इस समस्या पर गहराई से विचार और तद्नुकूल प्रयास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

यह दुःखद तथ्य है कि स्वाधीनता संग्राम के समय में राजनीतिक चेतना के उद्भव के साथ समाज सुधार एवं नैतिक उत्थान के लिए भी प्रबल आन्दोलन चले थे, पर स्वाधीनता एवं सत्ता प्राप्ति के साथ जिस तरह राजनैतिक दिशा हीनता की भी अवहेलना की प्रवृत्ति बढ़ गयी है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में अनैतिकता एवं भ्रष्ट आचरण का बोल–बाला हो गया है। राजनीतिक एवं समाजिक नेता इस तथ्य को स्वीकार करते हुए भी इस सिलसिले में ठोस कदम उठाने में अंपने को असहाय पाते हैं। उनकी इस असमर्थता का कूफल जन सामान्य को भुगतना पड़ रहा है। इससे बुरी स्थिति और क्या हो सकती है? कि जन मानस नैतिकता, सत्य एवं ईमानदारी को अपवाद मानने लगा है। वह अपने परिणाम का कोई मार्ग नहीं देख पा रहा है। उसके सामने एक ही प्रश्न है, इस स्थिति में कौन समाज व व्यक्ति का उद्धार करेगा?

एक तरफ तो अनियंत्रित गति से जनसंख्या बढ़ रही है, दूसरी तरफ तेजी से अपराध, अनैतिकता एवं अनुशासनहीनता बढ़ रही है। राजनीति में भी अवांछनीय तत्वों के प्रवेश से यह अपेक्षा करना असंगत लगने लगा है कि राजनेता अनैतिकता दूर करने में सक्षम हो सकते हैं। स्वार्थ एवं सत्ता ने उन्हें विवेक सम्मत मार्ग अपनाने से वर्जित कर रखा है। हिन्दू एवं अन्य धार्मिक संगठनों से नैतिकता की रक्षा महर्षि दयानन्द के काल में ही असंभव लगती थी, क्योंकि नानाविधि मत–मतांतर संकीर्ण दायरों में सिमट कर समाज के उचित मार्गदर्शन में बजाय अपने स्वार्थ साधना में ही लिप्त थे। इस धार्मिक एवं नैतिक दिशाहीनता को समाप्त करने के लिए ही महर्षि ने आर्य समाज का संगठन पूरे देश में खड़ा किया। इसका उस समय अपेक्षित प्रभाव पड़ा भी। देश जिस तरह धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए उत्सुक हुआ, उसी तरह नैतिक जीवन को अपनाने की ओर भी उन्मुख हुआ। समाज में नवजागरण की लहर उठी।

देश और समाज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक प्रतीत हो रहा है कि जागरण की लहर की टूटी श्रृंखला को पुनः जोड़ा जाये। आर्य समाज की स्थापना हिन्दू समाज पर छायी पाखण्ड व आडम्बर की कालिमा को दूर कर विशुद्ध वैदिक ज्ञान के आलोक से उसे पुनः उद्भाषित करने के लिए की गयी थी। दुर्भाग्य की बात है कि आर्य समाज इस महान् लक्ष्य को भुला कर अन्य संगठनों की भांति संकीर्ण दायरे में सिमट गया है। महर्षि ने परिकल्पना की थी कि – "एक धर्म, एक भाषा एवं एक लक्ष्य के बिना भारत का पूर्ण हित एवं सामाजिक उन्नति होना दुष्कर है।" आर्य समाज के कर्णधारों को सोचना होगा कि यह संगठन महर्षि की इस परिकल्पना को साकार रूप देने में क्या सक्षम रह गया है? इस अक्षमता को दूर किये बना संगठन अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पायेगा। इसलिए आर्यजनों को अपनी शक्ति इसी प्रयास में केन्द्रित करनी होगी। – सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथाष्टमसमुल्लासारम्भः

इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा वेद।।१।।
–ऋ०मं० १०। सू० १२९। मं० ७।।

तम आसीत्तमसा गूळमग्रे ऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छयेनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम्।।२।।
–ऋ० मं० । सू० । मं०।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यातुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।
–ऋमं० १०। सू० १२१। मं० १।।

पुरुष एवेद ँसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।४।।
–यजुः अ० ३१। मं० २।।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति।
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म।।५।।
–तैत्तिरीयोपनि०।

हे (अङ्ग) मनुष्य! जिससे यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है जो धारण और प्रलयकर्त्ता है जो इस जगत् का स्वामी है जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है सो परमात्मा है। उसको तू जान और दूसरे को सृष्टिकर्त्ता मत मान।।१।।

यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत, रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी आच्छादित था। पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप से कार्यरूप कर दिया।।२।।

हे मनुष्यो! जो सब सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का आधार और जो यह जगत् हुआ है और होगा उसका एक अद्वितीय पति परमात्मा इस जगत् की उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान था। और जिसने पृथिवी से लेके सूर्य्यपर्यन्त जगत् को उत्पन्न किया है उस परमात्मा देव की प्रेम से भक्ति किया करें।।३।।

हे मनुष्यों! जो सब में पूर्ण पुरुष और जो नाश रहित कारण और जीव का स्वामी जो पृथिव्यादि जड़ और जीव से अतिरिक्त है, वही पुरुष इस सब भूत भविष्यत् और वर्तमानस्थ जगत् का बनाने वाला है।।४।।

जिस परमात्मा की रचना से ये सब पृथिव्यादि भूत उत्पन्न होते हैं जिस से जीते और जिसमें प्रलय को प्राप्त होते हैं, वह ब्रह्म है। उसके जानने की इच्छा करो।।५।।

जन्माद्यस्य यतः।। शारीरक सू० अ० १ । सूत्र० २।।

जिससे इस जगत् का जन्म, स्थित और प्रलय होता है, वही ब्रह्म जानने योग्य है।

प्रश्न- यह जगत् परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वा अन्य से?

उत्तर- निमित्त कारण परमात्मा से उत्पन्न हुआ है परन्तु इसका उपादान कारण प्रकृति है।

प्रश्न- क्या प्रकृति परमेश्वर ने उत्पन्न नहीं की?

उत्तर नहीं। वह अनादि है।

प्रश्न- अनादि किसको कहते और कितने पदार्थ अनादि हैं?

उत्तर- ईश्वर, जीव और जगत् का कारण ये तीन अनादि हैं?

प्रश्न- इसमें क्या प्रमाण है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति।।
– ऋ० मं० १। सू० १६४ । मं० २०।।
शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।२।। –यजुः० अ० ४० । मं० ८।।

(द्वा) जो ब्रह्म और जीव दोनों (सुपर्णा) चेतनता और पालनादि गुणों से सदृश (सयुजा) व्याप्य व्यापक भाव से संयुक्त (सखाया) परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और (समानम्) वैसा ही (वृक्षम्) अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है वह तीसरा अनादि पदार्थ इन तीनों गुण, कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं (तयोरन्यः) इन जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव है वह इस वृक्षरूप संसार में पापपुण्यरूप फलों को (स्वाद्वत्ति) अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को (अनश्नन्) न भोक्ता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप, तीनों अनादि हैं।।१।।

– क्रमशः

प्रभु देनेवाले का कल्याण करते हैं

–साभार

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।। ऋ० १।१।१६।।

हे (अङ्गिरः) समस्त ब्रह्माण्ड के अङ्ग–अङ्ग में व्यापक और प्राणों के भी प्राण (अङ्ग) सबके मित्र (अग्ने) परमेश्वर (त्वम्) आप (यत्) जिस हेतु से (दाशुषे) सर्वस्व दान एवं आत्म–समर्पण करने वाले उपासक के लिये (भ्रदम्) कल्याणकारी सुख, ऐश्वर्य (करिष्यसि) प्रदान करते हैं (तव इत् तत्) वह आपका (सत्यम्) सत्य, अटलव्रत नियम है।

हे प्रभो! आपने ही तो कहा है–ईशा वास्यमिदं सर्वं .... त्यक्तेन भुञ्जीथाः (यजुः० ४०.१) सभी धन परमात्मा का है, अतः त्यागपूर्वक उसका उपभोग करो। आगे बतलाया है–

अग्नि रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्।। ऋ० १.१.३।।

परमेश्वर की उपासना और भौतिक अग्नि को विविध कला–यन्त्रों में प्रयोग कर सभी आध्यात्मिक एवं भौतिक ऐश्वर्यों की प्राप्ति करो, जो प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होवें और तुम्हें यशएवं शूरवीरता को देनेवाले हों।

इसके अतिरिक्त–**स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं महयं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।** अथर्व० १९.७१.१।। हे मनुष्यो! मैंने जो सभी अभीष्ट सुखों को प्राप्त कराने वाली इस वेदवाणी का उपदेश दिया है, उसके प्रचार–प्रसार के लिए अपनी सारी आयु, बल, प्रजा, पशु, कीर्ति धन, आत्मिक शक्ति सभी को लगा दो अर्थात् इन सबको मुझे समर्पित कर ब्रह्मलोक की प्राप्ति करो।

अङ्ग हे प्रियतम! आपकी इस आज्ञा को शिरोधार्य कर हमने अपना सर्वस्व आपके अर्पण कर दिया है। आप तो सब ऐश्वर्यों के स्वामी हैं सो हमारी यह तुच्छ भेंट आपकी प्रजा अर्थात् प्राणिमात्र के उपकार के लिये ही स्वीकार कीजिए। यह धन, सम्पत्ति, भवनादि हमारे थे ही कब? ये सब तो आपके ही हैं। हमने आपके आदेश को शिरोधार्य कर पुरूषार्थ द्वारा इन्हें एकत्रित मात्र कर लिया है। **मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सब तोय। तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मोय।।** त्वदीयं गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। हे वेदवाणी के स्वामिन्! यह सब ऐश्वर्य आपका ही है जिसे मैं आपकी प्रजा और जनहित के लिये समर्पित कर रहा हूँ। आप इसे स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत कीजिए।

हे अग्ने! सन्मार्ग प्रदर्शक भगवन्! हमने सुना है कि जो तेरा उपासक तेरे दर्शन पाने के लिए अपना सर्वस्व लुटा देता है, उसे तुम मालामाल कर देते हो। यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि देने वाले का तुम कल्याण करते हो, यह आपका अटल नियम है। जो तुम्हारी प्रजा के लिये भोजन, वस्त्र, अन्न, औषधालय, वापी, कूप, तड़ाग और विद्यालय खुलवाता है, उसे आप इस लोक और परलोक दोनों में सभी सुख साधनों को देते जाते हो। क्योंकि तुम्हें पता है कि अमुक व्यक्ति का धन परोपकारादि कार्यों में आपकी प्रजा के हितार्थ व्यय किया जा रहा है।

परन्तु यह तो प्रेयमार्ग है, जिसका फल परलोक में भोग लेने के पश्चात् इस लोक में फिर से जन्म लेना पड़ता है। यह तो सकाम कर्म या सौदागरी हुई। प्रभो! मुझे इस व्यवहार में रुचि नहीं है। अगले जन्म में कुछ अधिक साधन प्राप्त करने के लिये मैंने अपना सर्वस्व दाव पर नहीं लगाया था। मेरा उद्देश्य तो इन भौतिक ऐश्वर्यों को प्राप्त न कर आपके दर्शन लाभ करना है। योगदर्शन में महर्षि *पतञ्जलि ने कहा है–* **अपरिग्रह स्थैर्येजन्मकथन्ता सम्बोधः** (योग० २.३९) अर्थात् अपरिग्रह की सिद्धि हो जाने पर पूर्व जन्मों का ज्ञान हो जाता है। हे भगवन्! मुझे इतने जान लेने मात्र से ही सन्तोष नहीं है। मैं जिसके जान लेने पर अन्य किसी वस्तु को जानने की इच्छा ही नहीं रहती, उस ज्ञान की आशा लगाये बैठा हूँ। जब सामान्य भौतिक पदार्थों का दान करने वाले जनों का आप कल्याण करते हो और यह आपका व्रत है तो मैंने–

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि तेरे दर पर झोली लेकर आये इस याचक को आप खाली हाथ नहीं लौटायेंगे और मेरी झोली को भर मेरी जन्म–जन्म की प्यास को मिटा देंगे।

हे प्रभो! मैंने अपना सर्वस्व तुम्हारे अर्पण किया है। कुछ लौकिक सुख, समपत्ति, मान–सम्मान पाने के लिये नहीं। मुझे तो वह धन चाहिये जिसे पा लेने के पश्चात् और कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। जिसके सामने संसार के सारे वैभव हेय लगते हैं। मोती मिला है मुझको जीवन के मानसर में। कंकर

ईशोपनिषद्

१. प्रश्न- ईशोपनिषद् का मुख्य प्रतिपाद्य विषय क्या है?

उत्तर- इस उपनिषद् में परमात्मा एवं जगत् के स्वरूप, व्यक्ति के कर्त्तव्यों, संसार में जीने के ढंग तथा विद्या-अविद्या और लौकिक एवं अलौकिक सुख कैसे प्राप्त किया जा सकता है आदि का विवेचन किया गया है।

२. प्रश्न- इसका विशेष महत्त्व क्या है?

उत्तर- इस उपनिषद् का यदि गहराई से चिन्तन करें तो ज्ञात होगा कि इसमें जिन विषयों को सूत्ररूप में रखा गया है, शेष उपनिषदों में मानो उन्हीं का विस्तार है। विद्वानों का कथन है कि यदि कभी हमारा समूचा आध्यात्मिक साहित्य नष्ट हो जाए, और ईशोपनिषद् के प्रथम दो मन्त्र हमारे पास सुरक्षित रह जाएँ, तो भी हम पूरे अध्यात्म का महल पुनः खड़ा कर सकते हैं। इस उक्ति से इस उपनिषद् का महत्व भली प्रकार से स्पष्ट हो जाता है। यही नहीं, गीता के सार को यदि देखा जाए तो वह भी मानो इन्हीं प्रथम दो मन्त्रों की व्याख्या लगती है।

३. प्रश्न- इस उपनिषद् स्रोत क्या है?

उत्तर- यह उपनिषद् थोड़े-बहुत अन्तर के साथ यजुर्वेद की काण्वशाखा का चालीसवाँ अध्याय ही है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तथा इसमें तृण से लेकर परमात्मा तक सभी विषयों का समावेश है। चूँकि अन्य उपनिषदों का आधार भी यही उपनिषद् है, इसीलिए वास्तव में उपनिषदों में जिस अध्यात्म-विद्या का विवेचन किया गया है, उसका आधार वेद ही है।

४. प्रश्न-परमात्मा के बारे में लोगों के अनेक प्रकार की कल्पनाएँ कर रखी हैं। किसी का कहना है कि वह सातवें आसमान पर है, कोई कहता ह कि वह चौथे आसमान पर है, कुछ अन्य भी उसे साकार मानकर किसी स्थान-विशेष में ही उसका निवास-स्थान मानता है। उपनिषद् का इस सम्बन्ध में क्या कथन है?

उत्तर- परमात्मा के बारे में ये सब भ्रान्तियाँ अल्पज्ञता के कारण ही पैदा हो गई हैं। ऐसा माननेवालों ने परमात्मा के स्वरूप को ही बिगाड़कर रख दिया है। इसी कारण घोर नास्तिकता फैल रही है। उपनिषद् के पहले ही मन्त्र में यह तो बताया ही है कि परमात्मा कहाँ रहता है, साथ ही यह भी स्पष्ट निर्देश दिया है कि जीवन को सार्थक कैसे बनाया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इसका भाषार्थ इस प्रकार करते हैं - "... (यत्) जो (इदम्) प्रकृति से लेकर पृथिवी-पर्यन्त (सर्वम्) सब (जगत्याम्) चलायमान सृष्टि में (जगत्) जड़-चेतन जगत् है, वह (ईशा) ईश्वर अर्थात् सकल ऐश्वर्य से सम्पन्न, सर्वशक्तिमान् परमात्मा के द्वारा (वास्य) आच्छादित अर्थात् सब ओर से अभिव्याप्त किया हुआ है। (तेन) इसलिए (त्यक्तेन) त्यागपूर्वक अर्थात् जगत् से चित्त को हटा के (भुंजीथाः) भोगों का उपभोग कर। (किं च) और (कस्यस्वित्) यह धन किसका है! अर्थात् किसी का नहीं, अतः किसी के भी (धनम्) धन अर्थात् वस्तुमात्र की (मा) मत (गृधः) अभिलाषा कर। (१)"

५. प्रश्न- कथन के अनुसार परमात्मा सर्वव्यापक है तथा वह संसार की प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है। तो क्या वह सब मल-मूत्र में भी विद्यमान है?

उत्तर-जब वह है ही सर्वव्यापक, तो उसे सब वस्तुओं में मानना ही होगा।

६. प्रश्न- मल-मूत्रादि में भी परमात्मा को मानोगे तो क्या वह अपवित्र नहीं हो जाएगा?

उत्तर- परमात्मा के सही-सही स्वरूप को न जानने के कारण ही कुछ अल्पज्ञ लोग इस प्रकार की शंकाएँ उठाया करते हैं। वेदों और उपनिषदों में स्पष्ट बताया गया है कि परमात्मा सदा एकरस रहनेवाला तथा निर्लेप है, इसलिए उसके अपवित्र होने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

७. प्रश्न- जब परमात्मा सब वस्तुओं में विद्यमान है तो क्या हम उसे रोटी आदि के रूप में चबाते हैं या पानी के रूप में उसे पी जाते हैं?

उत्तर- परमात्मा निराकार तथा सर्वव्यापक है, अतः जिसका कोई आकार ही नहीं है और पहले से ही सब स्थानों में ओतप्रोत है, उसे कैसे खाया या पिया जा सकता है?

८. प्रश्न- जब परमात्मा सब जग है तो वह दिखाई क्यों नहीं देता?

उत्तर- इस रहस्य को न समझने के कारण लोगों ने अपने-अपने लिए इन आँखों से दिखने वाले अनेक प्रकार के परमात्माओं की कल्पनाएं कर रखी हैं। वास्तव में इस बात को भी गहराई से समझने की आवश्यकता है। हमारे शरीर की प्रत्येक इन्द्रिय का अपना-अपना कार्य तथा व किसी दूसरी इन्द्रिय का काम नहीं कर सकती। आँखों से देखा ही जा सकता है, सुना नहीं जा सकता। ठीक ऐसे ही हमारी ये आँखें केवल भौतिक पदार्थों को ही देख सकती हैं, अभौतिक वस्तुओं को नहीं। सीधी-सी बात है कि परमात्मा अभौतिक है, अतः उसे इन भौतिक आँखों से देखा ही नहीं जा सकता।

९. प्रश्न- तो परमात्मा को कैसे देखा जा सकता है?

उत्तर-परमात्मा निराकार है तो भौतिक आँखों से कैसे दिखाई दे? सूक्ष्म को सूक्ष्म से, अभौतिक को अभौतिक ही देख पाएगा। ईश्वर सर्वव्यापक है और सर्वदा प्राप्त है, मगर मलिन अन्तःकरण के कारण हमें उसकी प्रतीति नहीं होती। जप, ध्यान, योगाभ्यास तथा उपासना आदि के द्वारा स्वयं से परिचय करके ही परमात्मा का साक्षात् किया जा सकता है।

क्रमशः अगले अंक में....

'देश और समाज को अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले आदर्श महापुरूष ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द'

- मनमोह कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में जिस प्राचीन वैदिक कालीन गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति का विवरण प्रस्तुत किया था उसे साकार रूप देने का स्वप्न उनके प्रमुख अन्यतम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्वनाम महात्मा मुंशीराम) ने लिया था। उन्होंने इसके लिये अपना सर्वस्व अपर्ण किया। इतिहास में शायद ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। उन्होंने अपना पूरा जीवन, समस्त धन दौलत, भौतिक सम्पत्ति सहित अपने दोनों पुत्र भी गुरूकुलीय पद्धति को समर्पित किये थे। गुरूकुल को स्थापित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो त्याग व बलिदान किया उसका उल्लेख उनके जीवनीकार पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी ने अपनी पुस्तक 'स्वामी श्रद्धानन्द' में किया है। हम उसी विवरण को यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

गुरूकुल की स्थापना के सम्बन्ध में 'जो बोले सो कुण्डा खोले' की कहावत महात्मा मुंशीराम जी पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने शिक्षा की जिस पुरातन आर्ष पद्धति को पुनजीर्वित करने पर अपने ग्रन्थों में जोर दिया है, इसके लिए महात्मा श्रद्धानन्द जी ने हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति पैदा हुई कि उसके पीछे भिखारी बन गये। गुरूकुल की स्थापना का प्रस्ताव आपने ही आर्य जनता के सम्मुख उपस्थित किया था। उस प्रस्ताव को मूर्त रूप देने के लिए आप को ही गांव–गांव घूमकर गले में भिक्षा की झोली डालकर चालीस हजार रूपया जमा करना पड़ा *(आजकल के हिसाब से यह धनराशि लगभग १५ से २५ करोड़ के बीच हो सकती है– मनमोहन)* और घर–बार त्याग कर स्वयं भी गुरूकुल में आकर बसेरा डालना पड़ा। उसके आचार्य और मुख्याधिष्ठाता होकर उसको पालने–पोसने और आदर्श शिक्षणालय बनाने का सब काम भी आप को ही करना पड़ा। हृदय के दो टुकड़े–दोनों पुत्र शुरू में ही गुरूकुल के अर्पण कर दिये गये थे। फलती–फूलती हुई वकालत रूपी हरा पौधा भी गुरूकुल के ही पीछे मुरझा गया था। पहिले ही वर्ष, सन् १९०२ में आपने अपना सब पुस्तकालय गुरूकुल को भेंट किया। सम्वत् १९०८ में लाहौर आर्यसमाज के तीसवें उत्सव पर सद्धर्म प्रचारस प्रेस भी, जिसकी कीमती आठ हजार से कम नहीं थी, तीस हजार से अधिक लगा कर खड़ी की गई जालन्धर की केवल एक कोठी बाकी थी। उसको भी सन् १९११ में गुरूकुल में दसवें वार्षिकोत्सव पर गुरूकुल में निर्वाहार्थ भी आप कुछ नहीं लेते थे। कोठी दान करते हुए सभा के प्रधान के नाम लिखे एक पत्र में आपने लिखा था। "मुझे इस समय ३६०० रूपये ऋण देना है, वह मैं अपने लेख आदि *की आय से चुका दूंगा। इस मकान से उस ऋण का* कोई सम्बन्ध नहीं है।"

इस पर भी छिद्रान्वेषी लोगों के ये आक्षेप थे कि आप अपने पुत्रों के लिए कुछ न छोड़ कर पीछे उन पर कर्ज का भार लाद लायेंगे। मुंशीराम जी ने यह सब ऋण उतार कर और सन्तान को गुरूकुल की सर्वोच्च शिक्षा से अलंकृत करके ऐसे सब लोगों के मुंह बन्द कर दिये थे। इस प्रकार तन, मन, धन सर्वस्व आपने गुरूकुल को अर्पण कर दिया। अध्यापकों एवं कर्मचारियों पर भी इसका इतना असर पड़ा कि प्रायः सबने अपने वेतन में पीछे मिट्टी कर दिया। सन् १९०८ में आप को लाहौर में हर्निया का आपरेशन तक कराना पड़ा। पर, वह सब कष्ट सदा के लिए ही बना रहा। पेटी बांधने पर भी वह कष्ट कभी–कभी उग्र रूप धारण कर लेता था। पर, वह सब कष्ट सदा के लिए ही बना रहा। पेटी बांधने पर भी वह कष्ट कभी–कभी उग्र रूप धारण कर लेता था। कई बार पांच–पांच, छः–छः मास के लिए डाक्टर बाधित करके आप को क्वेटा, कसौली आदि पहाड़ी स्थानों पर भेजते थे,पर आपको एक–दो महीने में ही गुरूकुल की चिन्ता वहां से वापिस लौटी लाती थी। गुरूकुल के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए जो दौर आपको करने पड़ते थे, उनसे स्वास्थ्य को बहुत धक्का लगता था। सन् १९१०, १९११ और १९१२ में गुरूकुल से विद्यार्थियों का शुल्क लेना बन्द कर लिया गया था। उन वर्षों में आपको बजट की पूर्ति के लिए जो कठोर परिश्रम करना पड़ा, उसका स्वास्थ्य पर बहुत असर पड़ा। सन् १९१४ में आपने गुरूकुल के लिए १५ लाख रूपये की स्थिर निधि जमा करने के लिए कठिन परिश्रम शुरू किया ही था कि स्वास्थ्य ने साथ नहीं दिया। मानो अपने स्वास्थ्य की आपने उस सर्वमेध यज्ञ में अन्तिम आहुति दी थी, जिसका अलौकिक अनुष्ठान आपने अपने जीवन रूपी यज्ञकुण्ड में किया था। आपने अपने को गुरूकुल के साथ इस प्रकार तन्मय कर दिया था कि आप के व्यक्तित्व और गुरूकुल के अस्तित्व को एक–दूसरे से अलग करने वाली किसी स्पष्ट रेखा का अंकित करना संभव नहीं था। वैसे मुंशीराम जी के हृदय में इस सर्वमेध–यज्ञ के अनुष्ठान की भावना बहुत पहले ही पैदा हो चुकी थी।

सन् १८९१ की डायरी के ५ पौष (१२ जनवरी) के पृष्ठ में लिखा हुआ है– "मातृभूमि के पुनरूद्धार के लिए बड़े तप–युक्त आत्मसमर्पण की आवश्यकता है। बार–रूम में वकील भाइयों के साथ इस पेशे से धर्माधर्म के विषय में बातचीत हुई। मैं बार–बार अपने आत्मा से प्रश्न कर रहा हूं कि वैदिक धर्म की सेवा का व्रत धारण किये हुए क्या मैं वकील रह सकता हूँ? मार्ग क्या है? कौन बतलाएगा? अपने स्वामी परमपिता से ही कल्याण–मार्ग पूछना चाहिये। यह संशयात्मक स्थिति ठीक नहीं। अपने देश तथा धर्म की सेवा के लिए पूरा आत्म–समर्पण करना चाहिए। परन्तु परिवार भी एक बड़ी रूकावट है। संदिग्ध अवस्था में हूँ। कुछ निश्चय शीघ्र होना चाहिए। कृष्ण भगवान् ने कहा संशयात्मा विनश्यति। पिता, तुम ही पथ प्रदर्शक हो।" यही नहीं, एक वर्ष पहिले सन् १८९० के १५ माघ की डायरी में भी लिखा हुआ है "गृहस्थ मुझे अन्तरात्मा की आवाज सुनने से रोकता है, नहीं तो बहुत काम हो सकता था। फिर भी जो कुछ कर सकता हूं, उसके लिए परमात्मा को धन्यवाद है।" ऐसे उद्धरण और भी दिये जा सकते हैं और उनकी समर्थक कुछ घटनाए भी उद्धृत की जा सकती हैं, किन्तु इतने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि मुंशीराम जी गृहस्थ और वकालत दोनों के बन्धन काट कर देश और धर्म की वेदी पर पूरे आत्मा–समर्पण अथवा सर्वमेध–यज्ञ के अनुष्ठान की तैयारी बहुत पहिले से ही कर रहे थे। इसीलिए पतिव्रता पत्नी के असामयिक देहावसान के बाद पैंतीस–छत्तीस वर्ष की साधारण आयु, छोटे–छोटे बच्चों के लालन–पालन की विकट समस्या और मित्रों व सम्बन्धियों का सांसारिक प्रलोभनों से भरा हुआ अत्यन्त आग्रह होने पर भी मुंशीराम जी फिर से गृहस्थ में फंसने का विचार तक नहीं कर सकते थे।

निवृत्ति के मार्ग की ओर मुंह किये हुए महात्मा जी के लिए आत्म–समर्पण करने का अवसर उपस्थित होने पर फलती–फूलती वकालत भी रूकावट नहीं बन सकी। राजभवन की मोह–माया और ममता के सब बन्धन एक साथ तोड़ कर घोर तपस्या के लिए जंगल का रास्ता पकड़ने वाले बुद्ध के समान मुंशीराम जी ने भी वेद की इस वाणी को हृदयंगम करते हुए 'उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियो विप्रोऽजायत' की भावना से चण्डी पहाड़ की तराई में हरिद्वार में गंगा के उस पार विकट जंगलों का रास्ता पकड़ा। कहते हैं त्यागी दयानन्द ने भी सन् १८२४ के कुम्भ के बाद सर्वत्यागी होकर केवल लंगोटी रख तपस्या को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए इन्हीं जंगलों का रास्ता पकड़ा था। गुरूकुल की वह भूमि के समान ही आप के लिए तपोभूमि होने से, प्राचीन ऋषि–मुनियों की दण्डकारण्य की भमि के समान ही आप के लिए तपोभूमि बन गई। उठती हुई आयु के वैभव–सम्पन्न होने के जीवन के सर्वश्रेष्ठ भाग को उस बीहड़ जंगल में गुरूकुल के रूप में पूर्ण स्वतन्त्र उपनिवेश बसाने में लगा देने के कारण उस भूमि को आपकी कर्मभूमि कहना चाहिए। गंगा की धारा के प्राकृतिक प्रकोप के प्रतिकूल एक नयी सृष्टि की रचना करने वाले महात्मा मुंशीराम जी ही उस भूमि के ब्रह्मा थे। उस भूमि का छोटे से छोटा परिवर्तन भी आपकी आंखों के सामने हुआ था। गुरूकुल की वाटिका में लगाये गये एक–एक पौधे और उसमें बखेरे गये एक–एक बीज को आपका आशीर्वाद प्राप्त था। उस भूमि में खड़े किये गये मकानों की नींव तक में भरी हुई एक–एक बीज को आपका आशीर्वाद प्राप्त था। उस भूमि में खड़े किये गये मकानों की नींव तक में भरी हुई एक–एक रोड़ी और उस रोड़ी पर जमाई गई एक–एक ईंट में आपके त्याग की भावना कुछ ऐसी समाई हुई थी, जैसे आपने अपने हाथों से ही उनको चुना हो। घूमने की सड़कें, खेलने के मैदान और आश्रम तथा विद्यालय के गुरूकुल की सबकी सब रचना आपके महान् व्यक्तित्व की जीती जागती निशानी थी। ब्रह्मचारी और कर्मचारी ही नहीं, उस भूमि के लिए यह सर्वत्र–अर्पण अथवा सर्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान एक विस्तृत गृहस्थ का बोझ था। आपके सार्वजनिक जीवन के जिस भाग को इस जीवनी में वानप्रस्थ का नाम दिया जा रहा है, उसके लिए आप कहा करते थे– "मैं अधिकतर गृहस्थ में फंस गया हूँ। आपका यही विस्तृत गृहस्थ गुरूकुल कांगड़ी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।"

इन पंक्तियों को पढ़कर हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का सर्वस्व त्यागी स्वरूप प्रत्यक्ष होता है। उन्होंने जिस गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की वह आजादी व उसके कुछ वर्षों बाद तक फूला फला। वर्तमान स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी व महर्षि दयानन्द के विचारों व भावनाओं के अनुकूल हमें प्रतीत नहीं होता। स्वामी श्रद्धानन्द जी की यह जीवनी 'स्वामी श्रद्धानन्द' नाम से हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोन सिटी' द्वारा प्रकाशित की गई है। यदि किसी को आदर्श आर्य के जीवन के दर्शन करने हों तो वह आपको इस जीवनी में स्वमी श्रद्धानन्द जी के जीवन को पढ़कर मिलेगा। स्वामी जी का जीवन बहुआयामी था। उन्होंने देश की आजादी व समाज सुधार के अनेक कार्यों को किया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री रहे रैम्जे मैकडोनाल्ड ने उन्हें जीवित ईसामसीह की उपाधि दी थी। स्वामी जी की आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' एक उत्तम आत्मकथा है। आर्य विद्वान डॉ० विनोद चन्द्र विद्यालंकार जी ने 'एक विलक्षण व्यक्तित्व–स्वामी श्रद्धानन्द' नाम से स्वामी श्रद्धानन्द जी पर पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक भी उत्तम कोटि का ग्रन्थ हैं। आप इन ग्रन्थों को पढ़कर अपने जीवन को श्रेष्ठ जीवन बनाने की प्रेरणा ले सकते हैं। ओ३म् शम्।

परम आस्तिक एवं सत्योपासक महर्षि दयानन्द ने परम नास्तिक चार्वाक मत की सत्य बातों को स्वीकार कर आर्यत्व का परिचय दिया

-भावेश मेरजा

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती परम आस्तिक थे। वे वेदों को ईश्वर प्रणीत ज्ञान मानते थे। ईश्वर, वेद, कर्मफल, पुनर्जन्म, मोक्ष आदि को वे मानते थे। उन्होंने आर्य समाज का गठन आस्तिकवाद की ही बुनियाद पर किया था। आर्य समाज के प्रथम तीन नियम से यह बात भली–भाति सिंद्ध होती है। महर्षि नास्तिकता के निवारण एवं आस्तिकता के प्रतिपादन के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे। उनके प्रमुख सत्यार्थ प्रकाश का अधिकांश ईश्वर की सत्ता का प्रतिपादन, उसके सत्य स्वरूप का विवेचन, उसकी प्राप्ति के साधन तथा उसके सम्बन्ध में प्रवर्त्तमान विभिन्न भ्रान्तियों का निराकरण आदि विषयों को ही समर्पित हैं।

महर्षि को जब इस बात का पता चला कि थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक द्वय–कर्नल ऑल्काट और मैडम ब्लैवेट्स्की ईश्वर को नहीं मानते हैं तो उन्होंने तत्काल उन लोगों को एक चिट्टी लिखी जिसमें उन्होंने लिखा है– ''हम नास्तिकों के खण्डन करने में आलस्य करना पाप समझते हैं''।

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में महर्षि ने लिखा है– ''यह चार्वाक सबसे बड़ा नास्तिक है। उसकी चेष्टा को रोकना आवश्यक है क्योंकि जो मिथ्या बात न रोकी जाय तो संसार में बहुत से अनर्थ प्रवृत्त हो जाय।''

उपर्युक्त दोनों बातों से यह स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द नास्तिकता को बहुत बड़ा दोष मानते थे और उसे संसार से दूर करना चाहते थे। सत्यार्थ प्रकाश के १२वें समुल्लास में उन्होंने बौद्ध तथा जैन मतों से पूर्व चार्वाक मत की समालोचना की है जिसके मूल प्रचारक के रूप में उन्होंने किसी बृहस्पति नामक पुरूष का उल्लेख किया है। इस सामुल्लास में महर्षि ने चार्वाक द्वारा किया गया ईश्वर, वेद, पुनर्जन्म, परलोक, यज्ञ आदि के निषेध एवं खण्डन को अनुचित बताया है और उसके तथाकथित 'दर्शन' की भी प्रबल आलोचना की है।

महर्षि ने नास्तिकवादी, भौतिकवादी चार्वाक का खण्डन तो किया ही है किन्तु न्याय दृष्टि पूर्वक! इसका प्रमाण यह है कि सत्य के ग्रहण करने में सर्वदा उद्यत रहने वाले महर्षि ने चार्वाक की कुछ बातों को ठीक भी बताया है और मान्य भी किया है। जैसे कि–

१. चार्वाक ने त्रिदण्ड और भस्म लगाने को बुद्धि और पुरुषार्थ रहित पुरुषों द्वारा अपनी जीविका के लिए बनाए जाने की बात लिखी है। इसको मान्य करते हुए महर्षि ने लिखा है– ''जो त्रिदण्ड और भस्म धारण का खण्डन है, सो ठीक है।''

२. चार्वाक के ''लोकसिद्ध राजा ही परमेश्वर है' इस मन्तव्य को अर्ध सत्य के रूप में लेते हुए महर्षि ने लिखा है– ''यद्यपि राजा को ऐश्वर्यवान् और प्रजा पालन में समर्थ होने से श्रेष्ठ माने तो ठीक है, परन्तु जो अन्यायकारी पापी राजा हो उसको भी परमेश्वरवत् मानते हो तो तुम्हारे जैसा कोई मूर्ख नहीं।''

३. 'पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं... स्वपिता यजमानेन...' इस श्लोक के माध्यम से चार्वाक ने प्रश्न उपस्थित करते हुए कहा है कि– ''जो यज्ञ में पशु को मार होम करने से स्वर्ग को जाता हो तो यजमान अपने पितादि को मार, होम करके स्वर्ग को क्यों नहीं भेजता?''

पुनः 'मृतानामपि जन्तूनां... गच्छतामिह जन्तूनां...' इस श्लोक के द्वारा चार्वाक मृतक श्राद्ध का खण्डन करता हुआ कहता है–''जो मरे हुए जीवों का श्राद्ध और तर्पण तृप्ति कारक होता है तो परदेश में जाने वाले मार्ग में निर्वाहार्थ अन्न, वस्त्र और धनादि को क्यों ले जाते हैं? क्योंकि जैसे मृतक के नाम अर्पण किया हुआ पदार्थ स्वर्ग में पहुंचता है तो परदेश में जाने वालों के लिए उनके सम्बन्धी भी घर में उनके नाम से अर्पण करके देशान्तर में पहुंचा देंवें। जो यह नहीं पहुंचता तो स्वर्ग में वह क्यों पहुंच सकता है?''

चार्वाक के इन विचारों का अनुमोदन करते हुए महर्षि लिखते हैं– ''पशु मारके होम करना वेदादि सत्य शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा और मृतकों का श्राद्ध तर्पण करना कपोल कल्पित है। क्योंकि यह वेदादि सत्य शास्त्रों के विरूद्ध होने से भागवतादि पुराण मत वालों का मत है, इसलिए इस बात का खण्डन अखण्डनीय है।''

इतना ही नहीं, सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में यज्ञों में की जाने वाली पशु हिंसा का खण्डन करते हुए महर्षि ने चार्वाक प्रदत्त उपर्युक्त युक्तियों की सहायता ली है। महर्षि ने चार्वाक प्रदत्त इन बातों को 'युक्ति सिद्ध उपदेशों' की संज्ञा दी है।

(४) 'ततश्च जीवनोपायो... मृतानां प्रेतकार्याणि...' इस श्लोक में चार्वाक ने दशगात्रादि मृतक क्रियाओं को ब्राह्मणों द्वारा अपनी जीविका के लिए किया गया उपाय या लीला बताया है। महर्षि ने चार्वाक की इस बात को मान्य करते हुए अपनी टिप्पणी में लिखा है– ''हाँ, ब्राह्मणों ने प्रेत कर्म अपनी जीविकार्थ बना लिया है, परन्तु वेदोक्त न होने से खण्डनीय है।''

यहाँ यह तथ्य भी ध्यातव्य है कि महर्षि की दृष्टि में चार्वाक, बौद्ध, जैन आदि मतों के द्वारा की जाने वाली वेद निन्दा का मूल कारण वेदों के नाम पर अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाले वेदों के झूठे टीकाकार या व्याख्यानकर्ता हैं, जिन्होंने वेदों की भ्रष्ट व्याख्याएँ प्रस्तुत कर समाज में वेदों के प्रति अनावश्यक भ्रम, अनास्था, असन्तोष और तिरस्कार के भाव पैदा होने का स्थान बना दिया। महर्षि का मन्तव्य है कि महीधर सदृश वाममार्गी भ्रष्ट लोगों के द्वारा की गई वेदों की प्रमाण शून्य अशुद्ध व्याख्याएँ ही चार्वाक आदि वेद विरोधी मतों के उत्थान का कारण बनी। इसलिए चार्वाक द्वारा की गई वेद निन्दा यथा–वेदों को बनाने वाले भाण्ड, धूर्त्त, निशाचर हैं, वेदों में माँस खाना लिखा है, वेदों में पण्डितों के धूर्त्ततायुक्त वचन हैं इत्यादि के लिए महर्षि दयानन्द चार्वाक आदि की अपेक्षा वेदों की भ्रष्ट अनर्थकारी व्याख्याएँ करने वाले वाममार्गियों आदि को ही अधिक उत्तरदायी मानते हैं। महर्षि के इस विचार में सच्चाई भी है क्योंकि अगर उस युग में वेदों का सत्यार्थ प्रचलित रहा होता तो सम्भवतः ये चार्वाक आदि नास्तिक मतों का जन्म ही न होता और न ही ये चार्वाक आदि वेदों की निन्दा अभियान में स्वयं को प्रवृत्त करते।

इन्हीं कारणों से महर्षि ने वेदों के सत्यार्थ प्रकाशन को स्व–जीवन के प्रमुख कार्य के रूप में स्थान दिया और अपने द्वारा स्थापित आर्य समाज से भी यही अपेक्षा रखी कि उसके सदस्य वेदों के पढ़ने–पढ़ाने और सुनने–सुनाने को ही अपना 'परम धर्म' मानकर वेदों के सत्यार्थ की ज्योति को सदैव प्रज्वलित रखेंगे।

समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत् आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/मन्त्री/कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष–2019 एवं वित्तीय वर्ष–2017–2018 हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों को निर्देशित किया जाता है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक–15 दिसम्बर, 2018 तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करने हेतु सूचना एवं निर्देश जारी किया गया है, अतः सभी आर्य समाजों की भागीदारी सुनिश्चित किये जाने हेतु दिनांक–30 दिसम्बर, 2018 निर्धारित किया जाता है, अतः वांछित अभिलेख एवं चित्रादि जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें:–

01– सभासदों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।

02– साधारण सदस्यों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।

03– वार्षिक चुनाव कार्यवाही पंजिका की छायाप्रति।

04– विगत वर्ष की जमा दशांश रसीद की छायाप्रति।

05– चल–अचल सम्पत्तियों का विवरण।

06– आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के नाम एवं मोबाईल नंम्बर एवं आर्य समाज का स्पष्ट पता।

07– आर्य समाज में कितने कक्ष, यज्ञशाला एवं किरायेदार हैं और कितना किराया देते हैं का विवरण।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती),
सभा मन्त्री

मंत्र में, जो वर वेदमाता से मांगे गए हैं, उनमें से 'कीर्ति' और 'ब्रह्मवर्स्व' को, पात्रता अर्जित न होने से, अभी नहीं मांग रहा हूँ। मैं तो यह वर मांगना चाहता हूं कि महर्षि दयानन्द द्वारा चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, षट्दर्शन, ग्यारह उपनिषदों एवं अन्य अनेक ग्रन्थों के साररूप 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम एवं सप्तम सम्मुलास को ठीक–ठीक समझ कर हृदयंगम कर सकूँ, आत्मसात् कर सकूँ।

मैं, यह भी समझना चाहता हूं कि महर्षि को ब्रह्मयज्ञ (संध्योपासना), देवयज्ञ, (अग्निहोत्र), स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मंत्रों का संयोजन कर एक उपासना पद्धति क्यों बनानी पड़ी? क्या उनके समय में इस हेतु कोई पूजा–पद्धति लिखित में उपलब्ध नहीं थी? इन प्रश्नों के विस्तार में जाने से पूर्व, स्मरण दिलाना चाहता हूं कि १४ वर्ष की आयु में सही अर्थों में २१ वर्ष की आयु से गृहत्याग के पश्चात्, ३५ वर्ष की आयु अर्थात् १४ वर्ष तक, रात–दिन २४ घण्टे, महर्षि का आश्रय स्थल मंदिर ही थे। मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से, शिक्षा प्राप्ति के समय भी आश्रय स्थल लक्ष्मीनारायण मंदिर की एक कोठरी ही था।

महर्षि द्वारा मंदिरों में देखी गई पूजा किन शब्दावली में की जाती थी, इसका विवरण किसी भी जीवनी लेखक ने नहीं दिया है। मेरी दृष्टि में कोई लेख अभी तक नहीं आया है। अनुमान किया जा सकता है कि भीषण मानसिक यातना झेल चुके महर्षि दयानन्द परितोष प्राप्त कर लेते हो तो उनकी ईश्वर की अवधारणा का संकल्प पूरा हो जाता। खोज को विराम मिल जाता। पर ऐसा हुआ नहीं। बोध रात्रि को ही निश्चय हो गया कि 'शिवलिंग' की मूर्ति 'शिव' नहीं है। पूजा–पद्धतियों के गहन अवलोकन से, यह भी पूर्णतया समझ में आ गया, विश्वास हो गया कि ये पूजा–पद्धतियां ही ठीक नहीं हैं। महर्षि पुजारी का शब्दार्थ 'पूजा का अरि' शत्रु करते थे। दुर्भावनावश नहीं करते थे, यह अब समझ में आया। 'देव दयानन्द शरणं गच्छामि' का प्रणयन करते समय यह विचार मानसिक क्षितिज पर कौंधा कि सनातनी (मूर्ति पूजक) भाई किन शब्दों में अपने आराध्यों की पूजा करते हैं, जानना होगा। मैं जन्मजात आर्यसमाजी संस्कार में पला बढ़ा, डी.ए.वी. में अध्ययन करने के कारण मुझे व्यक्तिगत रूप से, किंचित भी जानकारी नहीं थी। विवाह से पूर्व पत्नि श्रीमती स्वदेश मिक्सड बैंक ग्राउण्ड (सनातनी+आर्यसमाजी) की थीं। वह सहज सुलभ भी हैं। सबसे पहिले उनसे ही पूछा बताया कुछ भी नहीं बोलते प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़ते हैं, फूल–फल चढ़ाते हैं। प्रसाद भेंट करते हैं। पुजारी प्रसाद का टुकड़ा मूर्ति के चरणों में रख देते हैं उस भेंट को भगवान (मूर्ति) द्वारा स्वीकार कर लिया गया, मानाजाता है। शेष प्रसाद भक्त को मिल जाता है। वह उस प्रसाद को सिर–माथे पर छुआ कर ग्रहण करता है। मूर्ति पर दान–दक्षिणा भी चढ़ाते हैं गोपनीय रखना हो तो दानपात्र में डाल देते हैं। अभी यही हुआ, ५०० व १००० के नोटों का विमुद्रीकरण होने के बाद तिरुपति बालाजी, वैष्णों देवी, सांई मंदिर, नासिक में गुप्तदान में डाले गये झंझट खत्म हुई। कालाधन स्वीकार करने में इन तथाकथित भगवानों को कोई आपत्ति नहीं थी कालाधन गवर्मेन्ट को न सौंपकर भगवान को ही भेंट किया और पुण्य कमाया। उधर पूछताछ, छापेमारी, जेल जाने का आसन्न भय था पत्नि से चल रही वार्ता का क्रम पकड़ता हूँ। मैंने पूछा–

स्तुता वरदा वेदमाता

पूजा के नाम बस इतना ही उत्तर हाँ में मिला। जिज्ञासा जाग्रत हो चुकी थी अब दस–बारह पुरुषों, महिलाओं से यह प्रश्न पूछ चुका हूँ। एक ने तो विषय को गोपनीय बताकर कुछ भी कहने से मना कर दिया पूजा पद्धति कोई बताने की चीज थोड़े ही होती है, मन की बात है। अन्य लोगों ने जो बताया सर्वांध में वही था जो पत्नी बता चुकी थी। अपवाद स्वरूप शिवभक्त परिचित व्यास जी ने बताया कि ओम नमः शिवाय का उलट–पलट कर उच्चारण करते हैं, शिस्त्रोत पढ़ लेते हैं शिवलिंग का अभिषेक प्रतिदिन तो जल से करते हैं लेकिन पर्वों पर दूध से स्नान करते हैं। मैंने पूछा–ओम नमः शिवाय के अतिरिक्त और कुछ नहीं बोलते उत्तर– न में था। मैंने व्यासजी से कहा– आपके मंदिर में अन्य देवी देवता भी तो विराजते हैं उनसे क्या कहते हो? उत्तर था–जल छिड़कते हैं अगरबत्ती से सत्कार करते हैं और आरती के साथ सबकी पूजा हो जाती है। एक ब्राह्मण देवता ने कहा– मैं तो प्रतिदिन पूजा पाठ नहीं करता पर मूर्ति दिखने पर नमस्कार कर लेता हूँ। पर पत्नी प्रतिदिन करती है। आगे कहा–घर में मंदिर के समक्ष बैठकर कभी हनुमान चालीसा और कभी सुन्दरकाण्ड का पाठ ऐसा ही कुछ करती रहती है।

शुक्ला जी के मूर्ति के समक्ष नमस्कार कर लेने को पर्याप्त पूजा मान लेने पर पत्नी जी द्वारा वर्णित एक प्रसंग याद आ रहा है। तीन बहनें हनुमान मन्दिर गईं। बड़ी बहन ने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। दूसरी ने हाथ जोड़ लिये, तीसरी आधुनिका बहन ने हवा में दो ऊँगलियां उछाली, ओष्ठों से स्पर्श किया। कहा– हाय हनु!। पुनः व्यतिरेक हो गया।

शुक्ला जी की पत्नी द्वारा पूजा–पद्धति और अन्य महानुभावों के समानान्तर उत्तरों ने मुझे चौंका दिया। १४ से ३५ वर्ष की आयु तक महर्षि ने यही सब कुछ देखा–सुना। महर्षि के समय के पश्चात् स्थिति और बिगड़ती जा रही है। नए–नए भगवान अवतरित हो रहे हैं, तिरुपति बालाजी, वैष्णोदवी, दोनों सांई बाबा। एक मुसलमान फकीर साँई बाबा बन गय, उसकी पूजा होने लगी। पूजा की पद्धति सबकी एक जैसी। पूजा का अवसर प्राप्त करने के लिए तिरूपति बालाजी, वैष्णोदेवी, दोनों सांई बाबा आदि अनेक मंदिरों में लम्बी लम्बी कतारें लगती हैं। तिरुपति बालाजी में तो सामान्य दर्शन के लिए जिसमें भक्त हाथ जोड़ ही पाता है कि धकिया दिया जाता है, दिन के हसाब में लोग पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। शायद आपको पता हो, तिरुपति बालाजी विश्व का सबसे धनाढ्य मंदिर है। प्रतिदिन डेढ़ करोड़ रुपये का चढ़ावा प्राप्त होता है। इस पृष्ठ भूमि में, महर्षि दयानन्द को ईश्वर का वैदिक स्वरूप निर्धारित कर, उसकी पूजा विधि निर्धारित करना अभीष्ठ था, अनिवार्य था और अपरिहार्य था। महर्षि ने वेदों के २०४१६ (वेद मर्मज्ञ शिवनारायण उपाध्याय) मन्त्रों में से केवल ८ मंत्रों का चयन कर, पूजा पद्धति बनाई जिसका नामकरण किया, स्तुति, प्रार्थना और उपासना मंत्र।

स्तुति यानि गुणगान, रुद्र गान या प्रशंसा। महर्षि स्तुति का अर्थ करते हैं– 'यथार्थ वर्णन'। अर्थात् जस का तस वर्णन। महर्षि वेदसम्मत ईश्वर का यथार्थ वर्णन करते हुए इंगित भी नहीं करते कि हिन्दू पौराणिक मूर्ति पूजकों व अन्य धर्मावलम्बियों का ईश्वर, ईश्वर के लिए अपरिहार्य मापदण्डों पर खरा उतरता ही नहीं है।

स्तुति में ईश्वर का स्वरूप निर्धारित करते हैं। पहिले ही मत्र में ईश्वर को देव, सविता सम्बोधित कर दुरितानि–दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख के पराभव की प्रार्थना करते हैं। पूजा का अधिकारी बनने की प्रथम और शत–प्रतिशत अनिवार्य सीढ़ी। देव–दिव्यगुणयुक्त, सुखदाता, कामना करने योग्य। सविता– सब जगत् का उत्पादक, ऐश्वर्य दाता। देव व सविता के पश्चात् बताया कि वह ज्योति रूप (हिरण्यगर्भः) है। वह ब्रह्माण्ड के नक्षत्र मण्डल में करोड़ों अरबों की संख्या में उपलब्ध तारे–सितारों का निर्माण करने वाला, धारण करने वाला, अर्थात् नक्षत्र मण्डल में सितारों की दूरी निश्चित कर अपनी धुरी (एक्सिस) व निश्चित परिधि में भ्रमण कराने वाला है। वही परमात्मा समस्त प्राणी और अप्राणी जगत् का उत्पत्ति कर्त्ता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उससे ही परिव्याप्त है। दो पैर व चार पैर वाले जीव उसने ही बनाए हैं। वह सबका स्वामी प्रजापति है। वही मनुष्यों को आत्मज्ञान दाता, शारीरिक और सामाजिक बल को देने वाला है। वही बन्धु–भ्राता के समान परम सहायक है। ऐसे ही परमेश्वर की छाया अमृत (मोक्षदायिनी) है अन्यथा जीव, जन्म–मृत्यु के चक्र में चिरकाल फंसा रहेगा। अंतिम मंत्र में कहा गया है–प्रभु! आप अग्नि हो–प्रकाश स्वरूप और सब जगत् को प्रकाशित करने वाले। हमारे कुटिलता युक्त एवं पाप कर्मों को दूर कीजिए।

प्रथम मंत्र में 'दुरितानि का पराभव' और अंतिम मंत्र में जुहराणम एवं एनः से छुड़ाने की प्रार्थन की गई है, वह संयोजन दृष्टव्य है। महर्षि का कमाल देखिए– स्तुति, प्रार्थना और उपासना के आठ मंत्रों के चयन में, इन तीनों पृथक् प्रतीत होते हुए अवयवों का कैसा अपूर्व, अनूठा अद्वितीय गुंफन कर एक सांगोपांग पूजा पद्धति दी है। महर्षि को शतशः सहस्त्र नमन।

–सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
२२, नगर निगम क्वार्टस जीवाजीगंज,

बेटियाँ

देश की रही सदा से जान बेटियाँ।
संकटो में थामती कमान बेटियाँ।।
देश में कभी भी कोई समस्या आई,
बेटियों ने हौंसले के साथ मिटाई।
उन्नीस सौ सत्तावन में जब क्रान्ति आई,
तलवार लेकर कूद पड़ी लक्ष्मीबाई।
देश हित हो गई बलिदान बेटियाँ।।१।।
ओलम्पिक में हमने, जब पदक न पाये थे।
महिलाओं ने भारत को पदक दिलाये थे।
शम्भु–निशम्भु का जब खौफ छाया था,
माँ दुर्गा ने एक क्षण में, मार गिराया था।
वीरों की रही सदा से, खान बेटियाँ।।२।।
जीजाबाई ने शिवाजी, वीर बनाया था,
अपना राष्ट्र शिवाजी ने तब बनाया था।
कैकेई ने राम को, वन में भिजवाया था,
बुराई अपने ऊपर ले, रावण मरवाया था।
ऐसे करती देश का, कल्याण बेटियाँ।।३।।
देख लो अब बेटियों की हत्या न करो,
भ्रूण हत्या पाप है, इस पाप से डरो।
बेटी दुर्गा लक्ष्मी है, ध्यान तो धरो,
परिवार की खुशी है, इनके कष्टों को हरो।
देश का करेगी ये, उत्थान बेटियाँ।।४।।
संकटों में थामती कमान बेटियाँ।

रचयिता –मा० चन्द्रपाल आर्य बिजनौर

आर्य समाज इकला–गाजियाबाद (उ0प्र0) सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के उपमन्त्री एवं जिला प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के प्रधान मा० ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य के परिवार में आर्य समाज इकला के माध्यम से सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन २८, २९ नवम्बर २०१८ को किया गया यज्ञ ब्रह्मा सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती रहे वेदपाठ गुरूकुल पूठ के ब्र० आनन्द आर्य- राजेश आर्य ने किया श्री महेन्द्र सिंह तथा श्री माया प्रकाश त्यागी जी का भी उपदेश्या हुआ म० जगमाल जी के भजन हुए इस अवसर पर एक नामकरण संस्कार वरेण्यम् आर्य नाम रक्खा गया तथा एक बेटी मेघा आर्या का जन्म दिन भी मनया गया पूरे जिले के मुख्य-मुख्य आर्यों ने भाग लिया जिला मन्त्री श्री कृष्ण देव आर्य, स्वामी वेदानन्द जी आदि-आदि प्रमुख रहे ओमेन्द्र आर्य, देवेन्द्र आर्य, सत्येन्द्र आर्य, शम्भु आर्य, संजय आर्य, नबाब सिंह आर्य, राहुल आर्य यजमान बने साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज कन्टोमेन्ट सदर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

२२ से लेकर २५ नवम्बर २०१८ । आर्य समाज कन्टोमेट सदर का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ-साथ सम्पन्न कार्यक्रम प्रथम दिवस नगर में शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें सैकड़ों आर्य बन्धुओं ने भाग लिया आर्य समाज तथा दयानन्द उद्बोध से नगर का वातावरण गुञ्जायमान हो गया यज्ञ डॉ० सुरेश आचार्य ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपने जीवन को किस प्रकार से प्रभु मार्ग पर लाया जा सकता है, आदि प्रवचनों से आर्यजनों का मार्ग दर्शन किया भजनोपदेशिका आचार्य रूखमणी जी के सारगर्भित भजनों ने से भक्ति रस की प्रेरणा मिली इस अवसर पर डा० आचार्य सत्काम जी, आचार्य सन्तोष वेदालंकार, डा० निष्ठा जी पं० रूपचन्द्र जी आदि विद्वानों के प्रवचन हुए, मंत्री कृष्णानन्दन सभा प्रधान रविन्द्र आर्य जी ने सभी आगन्तुको और विद्वानो का आभार व्यक्त किया शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

– संवाददाता : शत्रोहन शर्मा

शोक संवेदना

1. प्रदेशीय अन्तरग सदस्य ज्ञानेन्द्र चौधरी जरोंठी की बहन अनीता आर्या का देहान्त हो गया आर्य समाज ग्राम अटौला मेरठ में उनका परिवार है उनके शान्ति यज्ञ को सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी अखिलानन्द सरस्वती, राजेन्द्र शास्त्री, राजपाल सिंह आर्य, वीरेन्द्र सिंह आर्य ने सम्पन्न कराया इस अवसर पर जिला सभा हापुड़ के प्रधान बाबू सुरेन्द्र सिंह समाज सेवी प्रताप सिंह मन्त्री राम रहीस आर्य, ओमदत्त आर्य, सुन्दर सिंह, महल सिंह तथा आस-पास के ग्रामों से भारी संख्या में लोग वहां सान्त्वना एवं आहुति देने पधारे ओमपाल सिंह तिमराज सिंह ग्राम प्रधान ने सभी आगन्तुको का सम्मान किया तथा धैर्य बधांया स्वामी जी के उपदेश से लोगों को प्रेरणा मिली।

-निरञ्नसिंह आर्य, अधिष्ठाता- वेदप्रचाचर हापुड़

2. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के पूर्व प्रधान श्री सुभाष सिंघल जी का देहावसान हो गया वे सच्चे आर्य और कर्मठ सेनानी थे उन्होंने केन्द्रीय सभा गा०बाद का भी लम्बे समय तक नेतृत्व प्रदान किया है आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० एवं आर्य मित्र परिवार की ओर से उनके परिवार के लिए धैर्य की प्रार्थना एवं शोक संवेदना व्यक्त की जाती है।

-मा० ज्ञानेन्द्र सिंह, प्रधान-जिला सभा गाजियाबाद

4. निकित कुमार आर्य पुत्र जीत सिंह स0अ0 गुरूकुल ततारपुर अचानक सड़क दुर्घटना में ५/१२/१८ को दिवंगत हो गया है पूरे क्षेत्र में एवं गुरूकुल ततारपुर के आचार्य प्रेमपाल जी ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया। सभा की ओर से एवं आर्यमित्र परिवार की ओर से सभा मन्त्री स्वामी जी ने परिवार में पहुंच कर धैर्य की प्रार्थना एवं शोक संवेदना व्यक्त की।

-प्रदीप शास्त्री, गुरूकुल पूठ

सुविचार-

जब आप दूसरों का भला करते हैं
तो उत्तम सुख ईश्वर आप को देता है
यह ईश्वर का अटल नियम है

वेद प्रचार शिविर का अयोजन

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गंगा स्नान मेला विदुर कुटी बिजनौर में वेद प्रचार शिविर का अयोजन किया गया। श्री विजय गोयल प्रधान एवं मंत्री श्री रमेश आर्य द्वारा आयोजित अन्तरंग सभा आर्य उप प्रतिनिधि सभा बिजनौर की बैठक के निर्णयानुसार जनपद में बिदुर कुटी, बैराज, भूतपुरी, एवं बालावाली में वेद प्रचार शिविर लगाने तथा मुख्य मेला विदुर कुटी पर मा० चन्द्रपाल सिंह आर्य, बैराज पर श्री भीष्म आर्य, भूतपुरी में श्री विक्रम देव आर्य तथा बालाबाली में श्री सुरेश चन्द्र को व्यवस्थापक बनाया गया।

वेद प्रचार शिविर में श्री नरेश दत्त आर्य, श्री कुलदीप विद्यार्थी, श्री तेजपाल सिंह, श्री घासीराम आर्य, श्री घनश्याम सिंह, श्री कल्याण आर्य, श्री जय प्रकाश आर्य, श्री शकूर खां ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये।

शिविर को श्री नरेन्द्र दत्त, श्री विजय गोयल प्रयाग, श्री रमेश आर्य, श्री रविन्द्र पाल आर्य, श्री विजेन्द्र सिंह-प्रबन्धक, श्री रूद्रपाल आर्य, श्री राजेश कुमार, श्री रणधीर सिंह, देवेन्द्र सिंह, पृथ्वी सिंह, राजपाल सिंह, उत्कर्ष, अमन सिंह, बलराज, सुबोध कुमार, सतेन्द्र आदि का सहयोग रहा।

शिविरि व्यवस्थापक- मा० चन्द्रपाल आर्य, जिला सभा - बिजनौर

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज संजय नगर सै० २३ गाजियाबाद १६ नवम्बर से २५ नवम्बर तक आर्य समाज संजय नगर सै० २३ गाजियाबाद में डॉ० योगेश कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ गुरूकुल सासनी की छात्राऐं एवं गुरूकुल बरनावा के छात्रों द्वारा वेदपाठ किया गया समय-समय पर विभिन्न विद्वान् वक्ता एवं आर्य भजनोपदेशक आते रहे भीष्म देव आर्य के भजन स्वामी आर्य वेश जी का भावपूर्ण पूर्णाहुति पर उपदेश हुआ के०सी० त्यागी जी मु० अतिथि रहे स्वामी अखिलानन्द जी एवं सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का भी प्रवचन हुआ श्री माया प्रकाश त्यागी जी का भी उपदेश हुआ कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री सेवाराम आर्य एवं श्री अरूण कुमार त्यागी रहे राजकुमार त्यागी प्रधान बाबा आदि-आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

– आनन्द कुमार शास्त्री, संवाददाता

तेरे शहर से तो मेरा गाँव अच्छा है

वहां मकान नंबर से पहचाना जाता हूँ
यहाँ मेरे पापा के नाम से जाना जाता हूँ

वहां खुले बदन पे टैटू छापा जाता है
यहाँ फटे कपड़ो में भी तन को ढापा जाता है

वहां कोठी है बंगले है और कार है
यहाँ परिवार है और संस्कार है

वहां चीखो की आवाजे दीवारों से टकराती है
यहाँ दूसरो की सिसकिया भी सुनी जाती है

वहां शोर शराबे में मैं कही खो जाता हूँ
यहाँ टूटी खटिया पर भी आराम से सो जाता हूँ

वहां रात को बहार निकलने में दहशत है
यहाँ रात में भी बाहर घुमने की आदत है

मत समझो कम हमें कि हम गाँव से आये है
तेरे शहर के बाज़ार मेरे गाँव ने ही सजाये है

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में
.....
.....

विभिन्न आर्य समाजों में सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की झलकियाँ

आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ के वेद प्रचार महोत्सव में भाग लेते हुए सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी एवं सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी।

आर्य समाज इकला गाजियाबाद उ०प्र० में सामवेद पारायण सम्पन्न कराते हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी एवं ब्रह्मचारीगण।

आर्य समाज मानसरोवर लखनऊ के वार्षिक महोत्सव से लिया गया छायात्रित में श्रीमती, प्रियंका शास्त्री जी भजन प्रस्तुत करते हुए।

आर्य समाज सहारा स्टेट जानकी पुरम द्वारा शुद्धि संस्कार कराते हुए आचार्य सोमव्रत शास्त्री

सूचित किया जाता है कि आमिर खान पुत्र स्व० फजले खान जिनका शुद्धि संस्कार दिनांक ५.१२.२०१८ को आर्य समाज सहारा स्टेट जानकी पुरम् में आचार्य सोमव्रत शास्त्री जी द्वारा वैदिक रीति से कराया गया आमिन खान सुपुत्र स्व० फाजले खानजी ने प्रसन्नता पूर्वक स्वच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया है आज से उनका नाम अमर पंत कहा अथवा बोला जाये हम आर्य मित्र आपको शुभकामनाएं प्रदान करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

–पं हरीश कुमार शास्त्री

आर्य समाज बृजनगरी नन्दग्राम, गाजियाबाद द्वारा अर्थव वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराते हुए आचार्य बृजेश कुमार शास्त्री एवं वेदपाठी उदयवीर शास्त्री गुरूकुल के ब्रह्मचारीगण। द्वारा लिया गया छया चित्र

।। ओ३म् ।।
आर्य समाज अंधेरी
कार्यक्रम स्थल : 120, आराम नगर-1,
सात बंगला, अंधेरी (प), मुंबई-61
21 कुण्डीय महायज्ञ
गुरूवार 20 से रविवार 23 दिसम्बर 2018
समय- प्रातः 7.30 से 10.00 बजे
सायं- 8.00 से 10.00 बजे तक
सभी आर्यजन आर्य समाज अंधेरी में सादर आमंत्रित हैं

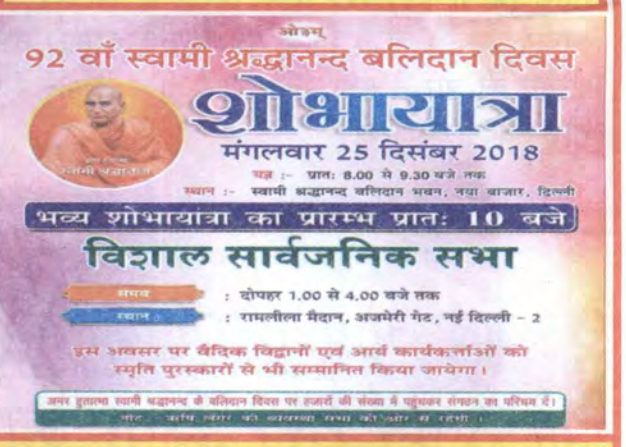

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।